Dr. Kumari Priyanka

Department of history

H.D jain college,ara

Notes for BA part 3

Topic:- कुतुबुद्दीन ऐबक का संक्षिप्त विवरण दें

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210) भारत में मुस्लिम शासन स्थापित करने वाला पहला तुर्क सुल्तान था। वह मूल रूप से एक तुर्की गुलाम था, जिसे मोहम्मद गौरी ने खरीदा था। अपनी योग्यता, वीरता और प्रशासनिक दक्षता के कारण वह गौरी का विश्वासपात्र सेनापति और दिल्ली का शासक बना। गौरी की मृत्यु के बाद, 1206 ई. में ऐबक ने स्वतंत्र रूप से शासन संभालकर गुलाम वंश की स्थापना की, जो दिल्ली सल्तनत का पहला राजवंश था।

प्रारंभिक जीवन और उदय

कुतुबुद्दीन ऐबक का जन्म मध्य एशिया में एक तुर्क परिवार में हुआ था। बाल्यकाल में उसे गुलाम बनाकर बगदाद ले जाया गया, जहां वह कई व्यापारियों के हाथों से गुजरता हुआ मोहम्मद गौरी के अधीन आया। गौरी ने उसकी योग्यता को पहचाना और उसे अपने दरबार में एक महत्वपूर्ण स्थान दिया। वह जल्द ही एक कुशल योद्धा और सेनापति के रूप में प्रसिद्ध हो गया।

मोहम्मद गौरी के सैन्य अभियानों में भूमिका

कुतुबुद्दीन ऐबक ने गौरी के भारत विजय अभियानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1192 ई. में तराइन के द्वितीय युद्ध में पृथ्वीराज चौहान को हराने के बाद, गौरी ने ऐबक को दिल्ली और उसके आसपास के प्रदेशों का प्रशासन सौंप दिया। 1194 ई. में उसने कन्नौज के राजा जयचंद को पराजित किया और कई हिंदू राज्यों को अधीन कर लिया।गुलाम वंश की स्थापना (1206 ई.)

मोहम्मद गौरी की 1206 ई. में मृत्यु के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक ने स्वयं को दिल्ली का स्वतंत्र सुल्तान घोषित कर दिया और गुलाम वंश की नींव रखी। हालांकि, उसकी सत्ता लाहौर और दिल्ली तक सीमित थी, लेकिन उसने प्रशासन को संगठित करने का प्रयास किया।

शासन और उपलब्धियाँ

1. राजधानी - ऐबक ने अपनी राजधानी लाहौर में स्थापित की और दिल्ली को एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक केंद्र बनाया।

2. कुतुब मीनार का निर्माण - उसने कुतुब मीनार का निर्माण शुरू कराया, जो बाद में इल्तुतमिश द्वारा पूरा किया गया।

3. मस्जिदों का निर्माण - ऐबक ने कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद (दिल्ली) और अढ़ाई दिन का झोपड़ा (अजमेर) जैसी मस्जिदों का निर्माण कराया।

4. 'लाख बख्श' की उपाधि - अपनी उदारता और दानशीलता के कारण वह 'लाख बख्श' (लाखों का दान करने वाला) कहलाया।

5. स्थानीय राजाओं से संबंध - ऐबक ने भारतीय राजाओं से कूटनीतिक संबंध बनाए और अपने शासन को मजबूत करने के लिए इल्तुतमिश को अपना उत्तराधिकारी चुना।

मृत्यु और उत्तराधिकारी

1210 ई. में लाहौर में पोलो (चौगान) खेलते समय घोड़े से गिरकर उसकी मृत्यु हो गई। उसके बाद, उसका उत्तराधिकारी आरामशाह बना, लेकिन जल्द ही इल्तुतमिश ने उसे पराजित कर सत्ता संभाल ली।

निष्कर्ष

कुतुबुद्दीन ऐबक का शासनकाल केवल चार वर्षों का था, लेकिन उसने भारत में मुस्लिम शासन की नींव रखी। उसकी नीतियों और प्रशासनिक संरचना ने दिल्ली सल्तनत के भविष्य को आकार दिया। गुलाम से सुल्तान बनने तक की उसकी यात्रा उसे एक अद्वितीय ऐतिहासिक व्यक्तित्व बनाती है।